RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in
ISSN: 2584-1270
Vol.: 1, Issue: 2, July-December 2023, pp. 8-14

भारत - नेपाल सीमा विवाद "कालापानी, लिपुलेख, सुस्ता" : द्विपक्षीय भू-राजनीतिक सम्बंधो पर प्रभाव का अध्ययन

अभिषेक भारती

राजनीति विज्ञान विभाग

सी. एम. पी. डिग्री कॉलेज , इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

ई- मेल - akhileshkumar79720165@gmail.com

सारांश

भारत नेपाल के मध्य परस्पर निर्भरता द्विपक्षीय सम्बंधो की कुंजी है किंतु पिछले कुछ वर्षो में चीन-नेपाल सामरिक सम्बन्धो में आई मजबूती ने तथा पाक समर्थित आतंकवादी संगठनो का सीमावर्ती क्षेत्र में बढते प्रभाव की घटनाओ ने भारत नेपाल खुली सीमा को अतिसंवेदनशील बना दिया (Pyakurel, 2018)। बाहय शक्तियो के सामरिक निवेश व राजनीतिक लाभ हेतु वामपंथी राजनीतिक दल द्वारा कालापानी व अन्य सम्बंधित सीमा विवाद आदि कारणो से द्विपक्षीय सम्बंधो में गिरावट आई है। यह लेख सम्बंधो में आई गिरावट से सम्बंधित निम्नलिखित बिंदुओ को समझने का प्रयास करता है -

- नेपाल में बाहय शक्तियो के हस्ताक्षेप व वामपंथ के राजनीतिक प्रादुर्भाव का भारत-नेपाल सम्बंध पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना?
- द्विपक्षीय सीमा विवाद के कारण व सीमा विवाद समाधान हेतु किए गए प्रयास व वर्तमान विवाद के कारण का अध्ययन करना?

मुख्य शब्दः सुस्ता, भारत-नेपाल मैत्री संधि 1950, चीन, सुगौंली संधि 1816, काली नदी।

परिचय

संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य नेपाल विश्व की दो प्रमुख शक्तियो के मध्य अंतस्थ, भारत का उत्तरी पडोसी राष्ट्र है। नेपाल की उत्तरी सीमा चीन अधिकृत तिब्बत तथा दक्षिण, पश्चिम व पूर्वी सीमा क्रमशः 'उत्तर प्रदेश, बिहार व प.बंगाल', 'उत्तराखंड', 'सिक्किम' से लगती है। भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की समाप्ति के बाद पूर्ववर्ती समस्त संधियो को समाप्त कर 1950 की शांति व मैत्री संधि के माध्यम से सदियो के भारत-नेपाल परम्परागत सम्बंधो को नवीन आधार प्रदान किया गया। सामान्यतः इस संधि का अनुच्छेद 6 व 7 संधि की आत्मा है क्योंकि इन अनुच्छेदो में प्रावधानित बिंदुओ ने पिछले सात दशक में सीमापार मुक्त प्रवाह व आर्थिक गतिविधियो में संलिप्तता के

माध्यम से राजनीतिक मतभेदो के बावजूद ऐतिहासिक सम्बंधो को निरंतर अक्षुण बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है (Nayak N., 2010)। यधपि वर्तमान में 1800 किमी. से अधिक सीमा में से, लगभग दोनो देश के मध्य 98 प्रतिशत सीमा को लेकर आम सहमति बन चुकी है किंतु कालापानी व सुस्ता क्षेत्र सम्बंधित विवाद ने द्विपक्षीय सम्बंध में गिरावट का एक प्रमुख कारण है (Shrestha, 2013)।

कालापानी, चीन अधिकृत तिब्बत के उत्तरी छोर पर स्थित भारत नियंत्रित उत्तराखंड राज्य क्षेत्र के पिथौरागढ़ जिले में है (Bhattacherjee, 2020)। यह अपनी विशेष भू सामरिक स्थिति के कारण, सुरक्षात्मक रुप से अति महत्वपूर्ण है। कालापानी विवाद ब्रिटिश काल में हस्ताक्षरित सुगौली संधि से सम्बंधित है। इस संधि के आधार पर ही वर्तमान नेपाल के तराई क्षेत्र संबंधित एक तिहाई भूभाग पर भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद द्वारा नियंत्रण स्थापित कर लिया गया (Shrestha, 2013)। सुगौली संधि का भाग 5 में कालापानी को काली नदी के पश्चिमी क्षेत्र के रुप में चिन्हित करता है, किंतु संधि में काली नदी के उदगम की अस्पष्टता विवाद की वर्तमान जड है (Bhattacherjee, 2020)।

नेपाल, भारत-नेपाल सीमा विवाद नेपाल की राजनीति से घनिष्ठता से सम्बंधित है। नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता की वास्तविकता को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि पिछले 58 वर्षो में 49 बार प्रधानमंत्री की शपथ ली गई है। पिछले सात दशक की राजनीतिक अस्थिरता के बाद 2017 पूर्ण बहुमत वाली सरकार के सत्ता में आने से आम जनता में नेपाल के सर्वांगीण विकास के नव युग के अविर्भाव की उम्मीद जगी थी किंतु दोनो प्रमुख वामपंथी गुटो के मध्य सत्ता बटवारे सम्बंधित विवाद ने नए राजनीतिकत संकट को जन्म दिया। यह संकट, वैचारिक समानता वाले दोनो प्रमुख वामपंथी दलो को एक मंच पर लाकर नेपाल में आर्थिक व राजनीतिक निवेश की चीन के महत्वाकांक्षा के लिए भी एक झटका था। दिसम्बर 2021 में के. पी. ओली द्वारा संसद भंग करना व स्वय को कार्यवाहक प्रधानमंत्री नियुक्त करने के निर्णय के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय द्वारा शेर बहादुर देउबा को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। नवम्बर 2022 के आम चुनावो में नेपाली कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष शेर बहादुर देउबा व सीपीएन माओइस्ट के अध्यक्ष पुष्प कमल दहल के मध्य प्रधानमंत्री पद सम्बंधित आम सहमति के अभाव में के. पी. ओली के नेतृत्व वाली ने सीपीएन यूएमएल के समर्थन से पुष्प कमल दहल तीसरी बार नेपाल के प्रधानमंतत्री पद की शपथ ली है। किंतु के. पी. ओली व दहल के पूर्व के अनुभवो से इस सरकार का भविष्य भी चुनौतीपूर्ण प्रतीत होता है। 2015 में नव संविधान निर्माण के बाद के वर्षो में सत्ता का यह उथल पुथल नेपाल के आर्थिक ,लोकतांत्रिक विकास व सौहार्दय पूर्ण द्बिपक्षीय सम्बंधो के समक्ष सबसे बडी बाधा है।

एल.ओ.सी, एल.ए.सी. तथा कालापानी सम्बंधित सीमा विवाद ब्रिटिश उपनिवेशवाद से सम्बंधित है। भारत नेपाल सीमा निर्धारण का आधार "सुगौली संधि 1816" है (Manandhar, 2022)। सीमा विवाद समाधान व सीमांकन सम्बंधित आमसहमति बनाने हेतु नवंबर 1981 में संयुक्त स्तर की सीमा समिति का गठन किया गया (Dwivedi, 2021)। लगभग तीन दशको में समिति द्वारा अधिकांश सीमा पर आमसहमति बना ली गई है, किंतु 2 प्रतिशत क्षेत्र आज भी विवादित है (Shrestha , 2013)।

नेपाल दृष्टिकोण

नेपाल के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र लिम्पियाधुरा से काली नदी का उदगम हुआ। अतः कालापानी व लिपुलेख का क्षेत्र काली नदी के पूर्व में स्थित नेपाल के धारचूला जिले में है,ऐसे में यह क्षेत्र नेपाल का भू भाग है। नेपाल का एक पक्ष यह भी है कि 1962 के युद्ध के समय सामरिक महत्व वाले कालापानी के क्षेत्र के अस्थायी इस्तेमाल की स्वीकृति राजा महेंद्र द्वारा दी गई थी, किंतु युद्ध बाद भी भारत के आईटीबीपी जवानो द्वारा क्षेत्र में पेट्रोलिंग की जाती रही है (Bhattacherjee, 2020)। ऐसे में कालापानी विवादित क्षेत्र नही बल्कि भारत के कब्जे में स्थित नेपाल का स्थायी भू भाग है। नेपाल सरकार ने भारत पर यह भी दोषारोपण किया है कि सुगौली संधि 1816 के तहत पूर्व निर्धारित पश्चिमी सीमा 5.5 किमी पश्चिम स्थानांतरित हो गई है (Lama, 2019) ।

भारतीय दृष्टिकोण

भारत सरकार के अनुसार स्वतंत्रता से पहले व स्वतंत्रता के बाद जारी समस्त मानचित्र में कालापानी को भारत क्षेत्र के रुप में अंकित किए जाने का तत्कालिन नेपाल सरकार द्वारा विरोध नही किया गया था (Sohini, 2020)। नेपाल के वर्तमान दावो के विपरित 1947 में भारत की स्वतंत्रता के समय जारी ब्रिटीश भारत के मानचित्र में काली नदी का उदगम लिम्पियाथुरा के बजाय पाणखंड से हुआ है। चूंकि पाणखंड कालापानी के दक्षिणी भाग में स्थित भारतीय क्षेत्र है, ऐसे में कालापानी भारतीय भू-क्षेत्र का हिस्सा हुआ। नई दिल्ली के अनुसार पूर्व में जारी मानचित्रों पर नेपाल द्वारा अपत्ति न करना,और वर्तमान में विवाद खड़ा करना, नेपाल के दावो की वैधता पर प्रश्नचिन्ह लगाते है। 1947 के पूर्व के प्रशासनिक व राजस्व अभिलेख के अनुसार भी कालापानी भारत का क्षेत्र है। वर्तमान में भारत नियंत्रित कालापानी, उत्तराखंड में पिथौरागढ़ जिले की धारचूला तहसील के अंतर्गत गर्बयाग गांव में है (Bhattacherjee, 2020)।

सुस्ता क्षेत्र

सुस्ता क्षेत्र पश्चिमी चम्पारण के वाल्मिकी टाइगर रिजर्व के उत्तर में स्थित है। इस क्षेत्र को भी नेपाल द्वारा जारी नवीन मानचित्र में दर्शाया गया था। इस क्षेत्र में विवाद का मूल कारण गंडक नदी के बदलते बहाव मार्ग को माना जाता है। सुगौली संधि 1816 के तहत गंडक नदी बिहार(भारत) व नेपाल के मध्य अंतराष्ट्रीय सीमा का निर्माण करती है। सुगौली संधि के समय सुस्ता का क्षेत्र गंडक नदी के दाहिने भाग में नेपाल अधिकृत क्षेत्र में स्थित था। किंतु समयानुसार नदी के बहाव क्षेत्र में आए परिवर्तन के कारण सुस्ता क्षेत्र नदी के दाहिने से बाएं किनारे की ओर सिफ़्ट हो गया (Dhungal, 2022), जो भारत नियंत्रित क्षेत्र है। यधपि इस क्षेत्र के निवासी मूलतः नेपाल से ही सम्बंधित है ,किंतु यहॉ स्वतंत्रता के बाद से ही सशस्त्र सीमा बल की तैनाती है। भारत ट्रांस बाउंडरी वॉटर डिस्प्युट से सम्बंधित अंतर्राष्ट्रीय कानूनो के तहत, इस क्षेत्र पर अपना दावा करता है।

वर्तमान विवाद

पिछले एक दशक में भारत-नेपाल संबंधों में विवाद का प्रमुख कारण सीमा अतिक्रमण ही रहा है। यह विवाद 2015 में भारत चीन पारगमन समझौते के दौरान शुरू हुआ था, जिसके अनुसार लिपुलेख समझौते द्वारा भारत से मानसरोवर जाने वाले तीर्थयात्रियों को अनुमति दी गई। यह समझौता न केवल मानसरोवर जाने के लिए भारतीय यात्रियों के लिए सस्ता व सुगम रास्ता उपलब्ध कराता बल्कि इसका उद्देश्य चीन अधिकृत तिब्बत में तीर्थयात्रा और व्यापार को बढावा देना भी था। नेपाल ने समझौते को अपनी अखंडता के लिए खतरा बताया क्योंकि यह 92 किलोमीटर की आवागमनात्मक सड़क उस क्षेत्र से गुजरती है ,जिसपर नेपाल अपना दावा करता है। पुनः जुलाई 2020 में नेपाल द्वारा जारी नवीन मानचित्र विवाद का कारण बना, क्योंकि मानचित्र में भारत के नियंत्रण वाले कालापानी तथा सुस्ता क्षेत्र को सम्मिलित करने के फैसले का भारत ने कडी प्रतिक्रिया दी (Rae, 2021) इस मानचित्र ने विवाद को और गहरा कर दिया। नेपाल के माओवादी दलों की राजनीति शुरुआत से ही आम जनमानस में राष्ट्रवाद की भावना को उद्वेलित करने हेतु भारत को विस्तारवादी ताकत के रूप में प्रदर्शित करने की रही है। यही वजह है कि अनेक राजनीतिक विशेषज्ञों का विचार है कि नेपाल में वामपंथी दलों के सत्ता में आने के बाद सीमा विवाद का तीव्र हो जाना और नेपाली कांग्रेस के नेतृत्व में सरकार की स्थापना के साथ सीमा विवाद संबंधित मौन के कारण, भारत नेपाल सीमा विवाद वास्तविकता से ज्यादा नेपाल की दलीय राजनीति से प्रभावित प्रतीत होता है। 2020 के बाद के सीमा विवाद को ही आधार बना कर देखा जाए तो उक्त धारणा और स्पष्ट हो जाती है, क्योंकि जहां ओली के नेतृत्व वाली सरकार ने नवीन मानचित्र को नेपाल के लिए ऐतिहासिक क्षण करार दिया, जबकि शेर बहादुर देउवा कार्यकाल में विवाद शांत हो जाता है, ऐसे में यह कहना गलत नही होगा कि कालापानी सम्बंधित विवाद नेपाल के साम्यवादी दलो के पोलिटिकल अधिप्रचार का परिणाम है। भारत के इतिहास में प्रथम बार 2020 में कालापानी क्षेत्र में नेपाली सेना तैनात की गई। जून 2020 में तत्कालिन सेना प्रमुख मनोज मुकुंद नरवाने ने अपने वक्तव्य में स्पष्टतः कहा कि ,भारत के पूर्वोत्तर में गलवान, डोकलाम व तवांग क्षेत्रो में चीन के अतिक्रमण के प्रयासो के बीच कालापानी क्षेत्र में नेपाली सुरक्षा बलो की तैनाती निश्चित ही नेपाल के कृत्य पर ड्रैगन के अदृश्य प्रभाव का परिणाम प्रतीत होता है (Singh, 2020)। इस संदर्भ में भारतीय विदेश मंत्रालय ने एक प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से नेपाल सरकार को सख्त हिदायत दी कि प्रमाणिक तथ्यो पर आधारित मानचित्र ही स्वीकार्य होंगे न कि काल्पनिकता पर आधारित राजनीतिक मानचित्र। नई दिल्ली ने स्पष्ट किया कि सदियों के परंपरागत व सौहार्दपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों के संचालन हेतु हिमालयन पड़ोसी को बाहरी शक्तियो की कठपुतली बनने के बजाय मित्रवत पडोसी की तरह भारत की क्षेत्रीय अक्षुण्ता के लिए खतरा न पैदा करे (Ethirajan, 2020)।

सीमा विवाद समाप्ति के प्रयास

भारत-नेपाल सीमा सीमांकन का प्रमुख आधार सुगौली संधि 1816 है, किंतु अजादी के बाद से ही, दोनो

देशो के मध्य कालापानी, सुस्ता को लेकर मौखिक मतभेद थे। भारत-नेपाल सीमा संचालन सम्बन्धित संवाद हेतु प्रथमतः 1981 संयुक्त स्तर की तकनीकि समिति का निर्माण किया गया (Sohini, 2020)। नेपाल में माओवाद के प्रभाव विस्तार के साथ कालापानी मुद्दे नेपाल की आंतरिक राजनीति का भाग बन गया। सामान्यतः के. पी. ओली के नेतृत्व वाली सीपीएन-यूएमएल का प्रमुख राजनीतिक मुद्दा है। जिसके बाद ही जून 1997 में प्रधानमंत्री आई. के. गुजराल की काठमांडू यात्रा के वक्त विवाद हल करने के लिए विशेषज्ञ स्तर के संयुक्त कार्यदल का गठन किया गया (Parashar, 2020)। किंतु विवाद समाधान को लेकर कोई विशेष प्रगति नही हुई।

मई 2014 में प्रधानमंत्री मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में पडोसी राष्ट्रो को निमत्रंण देने के निर्णय को पडोसियो के साथ सम्बंधो की निष्क्रियता की समाप्ति के प्रयास के रुप में देखा गया। इसी क्रम में अगस्त 2014 में भारतीय प्रधानमंत्री की नेपाल यात्रा दो दशको के बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री की प्रथम अधिकारिक यात्रा थी (Jaiswal, 2017)। प्रधानमंत्री मोदी ने फोर सी (सहयोग, संपर्क, संस्कृति और संविधान) पर जोर देते हुए नेपाल को एक पुराने और परंपरागत सहयोगी राष्ट्र के रूप में वर्णित किया (Ganguly, 2020) तथा विवाद सुलझाने हेतु विदेश सचिव स्तर का एक उच्चस्तरीय संवाद तंत्र निर्मित किया गया। इसके अतिरिक्त भारत-नेपाल सीमा प्रबंधन हेतु संयुक्त कार्यकारी समूह (जे.डब्ल्यू.जी.) का गठन किया गया, जिसकी 12वी बैठक जून 2015 में सम्पन्न हुई। अनेक संवाद तंत्र, संयुक्त बैठक के बावजूद भी अब तक इस विवाद का पुर्ण समाधान नही हो पाना, सौहार्दय पूर्ण द्विपक्षीय सम्बंधो के लिए चिंताजनक है। उक्त विवाद समाधान के प्रयासो के बीच ओली सरकार द्वारा जारी विवादित मानचित्र और दिसम्बर 2022 में पिथौरागढ क्षेत्र में काली नदी पर तटबंध निर्माण के समय पथराव व नेपाल पुलिस के लाठीचार्ज के विरोध में धारचूला निवासियो द्वारा भारत नेपाल अंतर्राष्ट्रीय सीमा को बाधित करने की घटना, दोनो देशो के मध्य गहरता विवाद द्विपक्षीय सम्बंधो हेतु घातक है।

21वीं सदी में चीन के आर्थिक महाशक्ति के रुप में उदय ने दक्षिण एशिया में भारत के स्वभाविक व प्राकृतिक प्रभुत्व को चुनौती प्रदान की है। वर्तमान में चीन का प्रमुख ध्येय भारत के पडोसी देशो में सामरिक निवेश के माध्यम से अपने सम्बंधो को गति प्रदान कर भारत की भू सामरिक नाकेबंदी करना ताकि भारत की बढती वैश्विक /क्षेत्रीय स्वीकार्यता के समक्ष नवीन चुनौती खडी की जा सके। भारत अपने उत्तर पूर्वी पडोसी नेपाल तथा उत्तर पश्चिमी पडोसी पाकिस्तान के साथ लंबी सीमा साझा करता है और चीन इन पड़ोसियों को केंद्र बनाकर अपने विस्तारवादी मंसूबों की प्राप्ति करना चाहता है। आजादी के बाद से ही भारत, हिमालयन पडोसी के राजनीतिक स्थिरता , लोकतांत्रिक मूल्यो की स्थापना व आर्थिक विकास का प्रमुख भागीदार रहा है, ऐसे में नेपाल के राजनीतिक दलो "विशेषकर माओवादी दल" को यह सुनिश्चित करना होगा कि राजनीतिक लाभ व बाहय शक्तियो के प्रभाव में भारत जैसे परम्परागत मित्र को तो नही खो रहा? नेपाली नेतृत्व कर्ता को यह समझना चाहिए कि भारत-नेपाल सम्बंध मानवनिर्मित कम स्वाभाविक व प्राकृतिक ज्यादा है। क्योंकि समुद्री सीमा के अभाव में लैंड्लॉक देश नेपाल का अधिगतम व्यापार व नागरिको के तीसरे देश में जाने का सुगम मार्ग भारतीय क्षेत्रो से होकर ही गुजरता है। नेपाल का अधिकांश व्यापार कोलकाता और

विशाखापत्तनम बंदरगाहो के माध्यम से ही होता है। जबकि तीसरे देश के नागरिकों के लिए आवागमन हेतु बनबसा (उत्तराखंड), गौरीफंटा, रूपेडिया, सुनौली (उत्तर प्रदेश), रक्सौल, जोगबनी (बिहार), रानीगंज (प. बंगाल) की सीमा अधिसूचित है।

वर्तमान में चीन द्वारा नाकेबंदी के प्रयासो के काउंटर नीति के तहत ही भारत 'क्वाड' समूह का सदस्य बना ताकि अमेरिका, अस्ट्रेलिया, जापान आदि देशो के साथ मिलकर हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के बढते प्रभाव को नियंत्रित किया जा सके। तथा दूसरी ओर नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी के तहत पडोसी राष्ट्रो में आर्थिक सहायता व विवाद समाधान के तीव्र प्रयासो के द्वारा सौहार्दपूर्ण द्विपक्षीय सम्बंध का निर्माण करना ताकि क्षेत्रीय स्तर पर चीन की स्वीकार्यता पर प्रश्नचिन्ह लगाया जा सके। इसके अतिरिक्त चीन की आर्थिक क्षमता को ध्यान में रखते हुए भारत को अपने प्रयासों में तेजी लानी होगी। क्योंकि वर्तमान में द्विपक्षीय संबंध आर्थिक निवेश के गुलाम प्रतीत होते है। क्योंकि वर्तमान में सांस्कृतिक भौगोलिक व परंपरागत संबंध की तुलना में आर्थिक निवेश द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने में महत्ती भूमिका अदा करता है, ऐसे में भारत को क्षेत्रीय व वैश्विक स्वीकार्यता को और मजबूती प्रदान करने हेतु आर्थिक रुप से भी और सशक्त होना आवश्यक है।

निष्कर्ष

ऐतिहासिक रुप से प्रगाढ समाजिक, सांस्कृतिक बंधन व परस्पर गैर-प्रतिबंधित आवागमन जैसे अद्वितीय विशेषता, भारत-नेपाल मजबूत सम्बंध का आधार है। किंतु एक आर्थिक व सैन्य ताकत के रुप में चीन के अविर्भाव व भारत के पडोसी राष्ट्रो में चीन के बढ़ते हस्तक्षेप ने भारत-नेपाल द्विपक्षीय सम्बंधो को नकारात्मक रुप से प्रभावित किया है। भारत नेपाल सीमा व संधि समीक्षा सम्बंधित विवाद नेपाल की राजनीति में साम्यवादी दलो के बढते प्रभाव का ही परिणाम है। नेपाल के सीमावर्ती विशाल जनसंख्यिकी राज्यो की सुरक्षा हेतु भारत को शीघ्राति शीघ्र कालापानी, लिपुलेख व सुस्ता विवाद का शीघ्र समाधान आवश्यक हो जाता है। विशेषकर सामरिक रुप से महत्वपूर्ण कालापानी क्षेत्र का समाधान अति आवश्यक है। एल.एस.सी क्षेत्र में बढते भारत-चीन टकराव के दौर में चीनी सेना के अतिक्रमण प्रयासो से भारतीय भू भाग की रक्षा में कैलाश मानसरोवर मार्ग पर लगभग 3600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित कालापानी क्षेत्र भारतीय सेना के लिए सामरिक महत्व का है।

दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय संतुलन, पड़ोसी राष्ट्रों में चीन के आर्थिक व राजनीतिक निवेश को नियंत्रित करने तथा भारत की क्षेत्रीय व वैश्विक स्वीकार्यता हेतु पडोसी राष्ट्रों के साथ सौहार्दयपूर्ण सम्बंध प्राथमिक शर्त है। नेपाल के सामरिक महत्व को देखते हुए भारत को सीमा सम्बंधित विवाद का शीघ्र निपटारा करना चाहिए। भारतीय नीति निर्माताओं को राष्ट्रहित को क्षति पहुचाए बिना यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सामरिक महत्व हिमालयन पडोसी ड्रैगन के अर्थजाल व विस्तारवादी मंसूबों का शिकार न होने पाए।

संदर्भ

Anbarasan Ethirajan. (10 JUNE 2020). India and China: How Nepal's new map is stirring old rivalries. BBC News.

Buddhi N. Shrestha. (2013). The Natural Environment and the Shifting Borders of Nepal. Hokkaido University Collection of Scholarly and Academic Papers.

Dinesh Bhattarai. (2018). Nepal -India Relations: Changing Perspectives.

Dr Pramod Jaiswal. (16 August 2017). India-Nepal Relations: Mixed Fortunes. Institute of peace and conflict studies: http://www.ipcs.org/comm_select.php?articleNo=5338

Dr. Hemant kumar Pandey & Akhilesh Dwivedi. (2021). India-Nepal Relations Under Chinese influence: An Analytical Perspective. Bluerose Publishers.

Jagat K. Bhusal. (2020). Evolution of cartographic aggression by India: A study of Limpiadhura to Lipulek. The Geographical Journal of Nepal , 13, 47-68.

Jagat Kumar Bhusal & Dwarika Nath Dhungal. (2022), Susta Disputes in the Southern Border: Nature and Evidence.

Kallol Bhattacherjee. (24 May 2020). Why are India and Nepal Fighting over Kalapani ? The Hindu .

Lok Raj Baral, Politics of Geo -Politics Continuity and Change in India -Nepal Relations (पृ. 43-63). New Delhi: Adarsh Books.

Manmath Nayak . (20 May 2020). Nepal Blames India For Covid -19 Spread ,Says Indian Virus More lethal than Chinese and Italian. India.com .

Nabraj Lama. (January 2019). Re-negotiating the Mahakali Treaty in the changing geopolitics of Nepal. International Journal of Science and Research Publications , 9 (1).

Nayak Sohini. (APRIL 2020). India and Nepal's Kalapani Border Disputes :An Explainer. ORF ISSUE BRIEF (356).

Nihar Nayak. (july 2010). India-Nepal Peace and Friendship Treaty(1950):Does it Require Revision. Strategic Analysis , 579-593.

Ranjit Rae. (2021). Kathmandu Dilemma Resetting India-Nepal Ties. Penguin Random House India.

Sachin Parashar. (19 May 2020). Boundary issue on bilateral agenda for two decades: Nepal. Times of India.

Sumit Ganguly. (2020). India Is Paying the price For Negelecting its Neighbors. VOICE.

Tri Ratna Manandhar. (2022). The Sugauli Treaty:Historical Perspective and Present Context .

Pitamber Sharma , Nepal-India Border Disputes:Mahakali and Susta (पृ. 19-26). Mandala Book Point Nepal.

Uddhab P. Pyakurel. (2018). Alternating Existing "Open Border" and consequence: A Discussion.